तृतीय लिंग विमर्श पर छत्तीसगढ़ में पहली बार अंतरराष्ट्रीय सेमीनार

मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग का आयोजन

देश–विदेश के विषय विशेषज्ञ, विद्वान, शोधार्थी और उभयलिंग समुदाय के सदस्य लेंगे हिस्सा

मैट्स यूनिवर्सिटी, रायपुर के हिन्दी विभाग द्वारा 'तृतीय लिंग विमर्शः कल, आज और कल' विषय दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जा रहा है। देश व प्रदेश के उभयलिंगी समुदाय के उत्थान के उद्देश्य से आयोजित इस सेमीनार में छत्तीसगढ़ सहित देश व विदेश के प्रसिद्ध साहित्यकार, विषय विशेषज्ञ तथा तृतीय लिंग समुदाय के प्रतिनिधिगण हिस्सा ले रहे हैं। तृतीय लिंग विमर्श पर आयोजित किया जाने वाला यह छत्तीसगढ़ का प्रथम अंतरराष्ट्रीय सेमीनार है।

इस सेमीनार का आयोजन 3 एवं 4 फरवरी 2023 को किया जा रहा है। इस सेमीनार में मुख्य अतिथि के रूप में पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केशरी लाल वर्मा, अमेरिका के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. प्रेम भारद्वाज, तृतीय लिंग विमर्श की प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. लता अग्रवाल (भोपाल), विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज उत्तप्रदेश के अध्यक्ष डॉ. शेख शहाबुद्दीन, कॉटन यूनिवर्सिटी, गोवाहाटी, असम की प्राध्यापक डॉ. नूरजहां रहमतुल्ला, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य एवं पं. रविशंकर शुक्ल सम्मान से सम्मानित सुश्री विद्या राजपूत, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड की सदस्य सुश्री रवीना बरिहा **और** देश की प्रथम उभयलिंगी ज्योतिषी भैरवी अमरानी आमंत्रित हैं।

सेमीनार में देश–विदेश के प्राध्यापकों, शोधार्थियों द्वारा तृतीय लिंग विमर्श से संबंधित अनेक विषयों पर शोध पत्रों की प्रस्तुति की जाएगी। सेमीनार के उपविषयों में हिन्दी कथा साहित्य और किन्नर विमर्श, तृतीय लिंग विमर्श का इतिहास, आधुनिक हिन्दी पद्य साहित्य में किन्नर विमर्श, तृतीय लिंग विमर्शः वैश्विक परिदृश्य, बॉलीवुड और तृतीय लिंग, किन्नर समाज के उत्थान में साहित्य का योगदान, तृतीय लिंग समुदाय की अस्मिता और समाज, तृतीय लिंग समुदाय के सशक्तिकरण में सरकार की भूमिका, तृतीय लिंग के प्रति समाज का दृष्टिकोण, तृतीय लिंग समुदाय का सामाजिक योगदान, तृतीय लिंग समुदाय के संघर्ष और अकेलेपन का संकट प्रमुख रूप से शामिल है। शोध सारांश प्रेषित करने की अंतिम तिथि 25 जनवरी 2023 एवं पूर्ण शोध पत्र प्रेषित करने की अंतिम तिथि 31 जनवरी 2023 निर्धारित की गई है। शोध पत्र हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में प्रेषित किए जा सकते हैं। सेमीनार के उद्घाटन सत्र में स्मारिका का भी विमोचन किया जाएगा। तृतीय लिंग जिसे थर्ड जेंडर कहा जाता है और वर्तमान में उभयलिंगी समुदाय के रूप में मान्यता प्राप्त है, उनके सशक्तिकरण की दिशा में भारत सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार ने जो कदम उठाए हैं उसकी सराहना पूरे विश्व में हो रही है। छत्तीसगढ़ के तृतीय लिंग व्यक्ति आज न सिर्फ पुलिस विभाग में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं अपितु हिमालय भी फतह कर रहे हैं। वास्तव में वे भी समाज का ही हिस्सा हैं। अनेक विपरित परिस्थितियों के बीच समाज में अपने अस्तित्व को स्थापित करने में संघर्षरत तृतीय लिंग समुदाय के सशक्तिकरण की दिशा में मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय सेमीनार एक और कदम है।

हिन्दी विभाग एवं मैट्स विश्वविद्यालय

मैट्स विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य का प्रथम निजी विश्वविद्यालय है। भारत सरकार के राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा वर्ष 2018 में बी प्लस–प्लस ग्रेड प्राप्त करने वाला यह राज्य का प्रथम विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय में विभिन्न संकायों के 13 विभाग और मैट्स कॉलेज भी स्थापित है। रायपुर शहर के बीच में विद्यार्थियों की सुविधा के लिए पंडरी में सिटी कैम्पस संचालित है। मुख्य परिसर ग्राम गुल्लू, आरंग में है जो अपने सौंदर्य एवं मूलभूत अधोसंरचनाओं के लिए पूरे राज्य में प्रसिद्ध है।

हिन्दी विभाग

नई युवा पीढ़ी के बीच राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं हिन्दी साहित्य के विकास हेतु मैट्स विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना वर्ष 2012 में की गई। हिन्दी विभाग के अंतर्गत बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी पत्रकारिता एवं पर्यटन, एम.ए. हिन्दी, पी–एच.डी. तथा पत्रकारिता एवं जनसंचार में डिप्लोमा का पाठ्यक्रम संचालित है। विभाग द्वारा हिन्दी सप्ताह, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमताओं के विकास हेतु राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठी एवं विशेष व्याख्यान सत्र का आयोजन किया जाता है।

शिक्षा के साथ कॅरियर का निर्माण

हिन्दी विभाग द्वारा संचालित बी.ए. (ऑनर्स) हिन्दी पत्रकारिता एवं पर्यटन का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को पत्रकारिता और पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रहा है। विद्यार्थियों को इस पाठ्यक्रम के तहत हिन्दी में अनुवादक, कार्यालयीन कार्य, हिन्दी साहित्य तथा हिन्दी पत्रकारिता (आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार पत्र–पत्रिकाएं, एफ.एम., न्यूज चैनल) में रोजगार के अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। मीडिया का व्यावहारिक ज्ञान और इंटर्नशिप पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग है। एम.ए. हिन्दी में पत्रकारिता का पाठ्यक्रम भी शामिल है जिससे विद्यार्थियों को रोजगार उपलब्ध हो सके।

विषय की प्रासंगिकता

तृतीय लिंग जिसे थर्ड जेंडर कहा जाता है और वर्तमान में उभयलिंगी समुदाय के रूप में मान्यता प्राप्त है, उनके सशक्तिकरण की दिशा में भारत सरकार और छत्तीसगढ़ सरकार ने जो कदम उठाए हैं उसकी सराहना पूरे विश्व में हो रही है। छत्तीसगढ़ के तृतीय लिंग व्यक्ति आज न सिर्फ पुलिस विभाग में आरक्षक के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं अपितु हिमालय भी फतह कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ में तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड का भी गठन किया गया है। राज्य में उभयलिंगी समुदाय के विकास के लिए कार्यरत **मितवा समिति** द्वारा स्थापित पुनर्वास केंद्र **गरिमागृह** उन्हें आत्मनिर्भर बना रहा है।

वास्तव में वे भी समाज का ही हिस्सा हैं। अनेक विपरीत परिस्थितियों के बीच समाज में अपने अस्तित्व को स्थापित करने में संघर्षरत तृतीय लिंग समुदाय के सशक्तिकरण की दिशा में मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित यह अंतरराष्ट्रीय सेमीनार एक और कदम है।

City भास्कर
वर्ल्ड रिकॉर्ड: 25 ट्रांसजेंडर्स ने फतह की हिमालय की 17348 फीट ऊंची चोटी
CITY PROUD

पुलिस विभाग में कार्यरत उभयलिंगी समुदाय के आरक्षक

आमंत्रित अतिथि

प्रो. केशरी लाल वर्मा
कुलपति, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

श्री प्रेम भारद्वाज 'ज्ञानभिक्षु'
(प्रख्यात साहित्यकार, अमेरिका)

डॉ. लता अग्रवाल
(वरिष्ठ महिला साहित्यकार, भोपाल)

डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख
(अध्यक्ष, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश)

डॉ. नूरजहां रहमातुल्लाह
(प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम)

सुश्री विद्या राजपूत
(सदस्य, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड, छत्तीसगढ़ सरकार, रायपुर)

सुश्री रवीना बरिहा
(सदस्य, छत्तीसगढ़ तृतीय लिंग कल्याण बोर्ड, छत्तीसगढ़ सरकार, रायपुर)

भैरवी अमरानी
(भारत के प्रथम उभयलिंगी समुदाय के ज्योतिषी)

सलाहकार समिति

मुख्य संरक्षक

श्री गजराज पगारिया (कुलाधिपति)
श्री प्रियेश पगारिया (महानिदेशक)

संरक्षक

प्रो. (डॉ.) के.पी. यादव (कुलपति)
डॉ. दीपिका ढांड (उपकुलपति)
डॉ. ज्योति जनस्वामी (डीन, एकेडमिक)

आयोजन समिति

आयोजन सचिव

श्री गोकुलनंदा पंडा (कुलसचिव)

संयोजक

डॉ. रेशमा अंसारी – 9926348979
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सह–संयोजक

डॉ. कमलेश गोगिया –9753388270
सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग

सदस्य

डॉ. रमणी चंद्राकर (सह प्राध्यापक)	– 9993397129
डॉ. सुनीता तिवारी (सहायक प्राध्यापक)	– 8928043699
डॉ. सुपर्णा श्रीवास्तव (सहायक प्राध्यापक)	– 9340348481
प्रियंका गोस्वामी (सहायक प्राध्यापक)	– 9131785064

देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
06 Feb 2023 - Page 15

तृतीय लिंग समुदाय को भी हम अपना माने : प्रो केशरी लाल वर्मा

रायपुर, 5 फरवरी (देशबन्धु)। पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो केशरी लाल वर्मा ने कहा है कि तृतीय लिंग विमर्श को बहुत कम विचार का मुद्दा बनाया गया है लेकिन अभी समय के साथ परिवर्तन हो रहा है और इस विषय पर सोचा जाने लगा है। समाज को चाहिए कि वह तृतीय लिंग व्यक्ति की भावनाओं को समझे और उनके साथ सामान्य व्यवहार करे न कि स्पेसिफिक मानकर अलग व्यवहार करें। समस्या तब आती है जब हम इन्हें अपना नहीं समझते। पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो केशरी लाल वर्मा ने यह बातें मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग द्वारा तृतीय लिंग विमर्श कल आज और कल विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में कहीं। उन्होंने मैट्स परिवार और आयोजन समिति को बधाई देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने ज्वलंत समस्या को समाज के सामने इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से रखा है। समय के साथ अब परिवर्तन हो रहा है और परिवर्तन इस रूप में भी हो रहा है कि संविधान के प्रावधान और सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय समानता का अधिकार प्रदान कर रहे हैं। मुख्य विषय यह है कि समाज उस रूप में ले। यह सामाजिक मुद्दा है और जब हम विचार करते हैं तो हमारे पास दो पक्ष सामने आते हैंए हम तो दृष्टा है लेकिन वे भोक्ता हैंए दोनों के सोचने की और समझने की अलग.अलग दृष्टि हैएवो भोग रहाए महसूस कर रहा हैए उपेक्षा का शिकार है। हम तृतीय लिंग व्यक्तियों की भावनाओं को समझें और उनसे सामान्य व्यवहार करें। इस अवसर पर मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो डा के पी यादव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रीत पुस्तक मूर्त से अमूर्त तक प्रो के पी यादव नामक का विमोचन भी किया गया। समापन समारोह के सत्र की अध्यक्षता करते हुए प विशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र एवं समाजकार्य अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष एवं प्राध्यापक डॉएन कुजूर ने कहा कि तब भी हम विमर्श शब्द से स्पष्ट है कि हम पिछड़े और वंचित वर्ग की बात कर रहे हैं जिन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ना आवश्यक है। सृष्टिकर्ता ने कोई कमी नहीं कीए कमी इनके प्रति हमारी सोच की है। तृतीय लिंग व्यक्ति किसी भी दृष्टि से कम नहीं हैंए वे आज बस्तर फाइटर के रूप में कार्य कर रहे हैं और छत्तीसगढ़ राज्य ऐसा पहला राज्य है जिसने इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाया है। डा कुजूर ने शोधार्थियों के शोध पत्रों की समीक्षा करते हुए अपने अनेक विचार रखे और इस संगोष्ठी के आयोजन को तृतीय लिंग समुदाय के विकास की दिशा मेंसराहनीय प्रयास बताया। इसके पूर्व तृतीय सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थानए प्रयागराज के अध्यक्ष एवं साहित्यकारए चिंतक डॉ शेख शहाबुद्दीन नियाम मोहम्मद शेख ने कहा कि वर्तमान समय मे तृतीय लिंग व्यक्ति समाज में अपनी अस्मिता की मुक्ति के लिए संघर्षरत है। इनकी लड़ाई मानवता की सोच पर आधारित है। तृतीय लिंग समुदाय का संघर्ष उनके अपने समुदाय के हित में है। वे मनुष्य के रूप में अपनी पहचान बनाना चाहते हैं। समापन सत्र में प्रसिद्ध भारत एवं अमेरिका के साहित्यकार कवि एवं चिंतक डा प्रेम भारद्वाज प्रसिद्ध कथाकार डॉ लता अग्रवाल विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान प्रयागराज के अध्यक्ष डॉ शेख शहाबुद्दीन नियाम मोहम्मद शेखए मैट्स यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोण् डा के पी यादव डीन एकेडमिक डॉ ज्योति जनस्वामी देश के प्रथम उभयलिंगी ज्योतिषी भैरवी अमरानी ट्रांस मेन पॉपी देवनाथ सहित देश के विभिन्न राज्यों के शोधार्थी विद्यार्थी एवं गणमान्य नागरिक और गरिमा गृह में निवासरत तृतीय लिंग समुदाय के सदस्य काफी संसख्या में उपस्थित थे। स

मैट्स यूनिवर्सिटी के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी तृतीय लिंग विमर्श: कल–आज और कल का समापन

तृतीय लिंग व्यक्तियों ने साझा किया अपना दर्द

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में तृतीय लिंग समुदाय के सदस्यों को भी अपनी जिंदगी के अनुभव साझा करने का अवसर प्रदान किया गया। उन्होंने अपने जीवन के अनेक संघर्षों अकेलेपन का संकटए परिवार से निकाला जानाए समाज का व्यवहार और दृष्टिकोण को साझा किया। उन्हें अभिव्यक्ति का अवसर दिए जाने पर देश के विभिन्न राज्यों के शोधार्थियों सहित अतिथियों एवं विषय विशेषज्ञों ने सराहना की।